चार गतियां

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जन्म और मृत्यु शाश्वत सत्य है। प्रश्न उठता है कि जन्म और मृत्यु आत्मा का होता है या शरीर का? आत्मा अजर–अमर अविनाशी है। आत्मा न तो मरता है और न जन्म लेता है। यह शाश्वत है। शरीर ही जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़ता है। जन्म और मरण से आत्मा का अस्तित्व नहीं मिलता। ये तो आत्मा की अवस्थाएं हैं। सांसारिक जीवों की मुख्य चार भव स्थितियां है– नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति। मानव अपने जीवन में किये हुए जीवन का परिणाम इस जीवन में या अगले जीवन में अवश्य प्राप्त करता है। जीव अपने किये हुए कर्मों के अनुसार एक गति से दूसरे गति में परिवर्तित होते रहते हैं। एक ही जीव अच्छे या बुरे कर्म के अनुसार कभी मनुष्य, कभी देवता, कभी तिर्यंच और कभी नरक गति में जन्म ग्रहण करता है। अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप जीव देवगति और मनुष्य गति में जन्म पाता है और बुरे कर्म के परिणामस्वरूप जीव तिर्यंच और नरक गति में जन्म ग्रहण करता है।

मनुष्य पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े, वृक्ष आदि औदारिक शरीर वाले होते हैं। इस शरीर की रचना स्थूल पुद्गलों से होती है। मोक्ष की प्राप्ति औदारिक शरीरों से हो सकती है। औदारिक शरीर में हाड़, मांस, रक्त, वसा, मज्जा आदि होते हैं। देवता और नारकीय जीवों का वैक्रिय शरीर होता है। शरीर को छोटा करना, बड़ा करना, सूक्ष्म करना, स्थूल करना आदि क्रियाएं वैक्रिय शरीर से कि जा सकती है। चतुर्दश पूर्वों के ज्ञाता साधु आवश्यक कार्य या सत्य को जानने के लिए जो शरीर धारण करते हैं, वह आहारक शरीर है। जो शरीर आहार आदि को पचाने में सहायक है और जो तेजोमय है, वह तैजस कार्मण शरीर है। यह सभी संसारी जीवों का शरीर कहलाता है। यह शरीर तब तक रहता है, जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती। औदारिक शरीर जन्मसिद्ध होता है। वैक्रिय शरीर जन्मसिद्ध और लब्धि दोनों प्रकार का होता है। आहारक शरीर योगशक्ति से प्राप्त होता है।

प्रवाह रूप से आत्मा और शरीर का संबंध अनादि है, किन्तु व्यक्ति रूप से सादि। औदारिक वैक्रिय और आहारक शरीर के अंगोपांग होते हैं, शेष शरीरों के नहीं होते हैं। तैजस और कार्मण शरीर अत्यंत सूक्ष्म होते हैं। ये दो शरीर सभी संसारी जीवों के प्रवाह रूप से सदैव रहते हैं। औदारिक आदि शरीरों में परिवर्ततन होता रहता है। हमारा जीवन चार गतियों भ्रमण करता रहता है। नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देव ये चार गतियां हैं। चौरासी लाख जीव योनियां हर गति में जीव ग्रहण करती हैं। जो जीव जैसा कर्म करता है, उसे वैसी गति प्राप्त होती है।

नारकीय का अर्थ है नरक गति। इसमें जीव क्यों जाता है? किन कर्मों के कारण नरक गति प्राप्त होती है? मनुष्य ही नरक गति में जाता है। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव इसमें नहीं जाते। महापरिग्रह, हिंसात्मक कार्य करना, पंचेन्द्रिय जीवों का वध करना, मांसाहार का सेवन करना या इसी प्रकार के अन्य जघन्य कृत्य करने से जीव नरकायुष्य कार्मण शरीर प्रायोग्य बंध करता है। नरक योनि के जीव को अनेक यातनाएं भोगनी पड़ती है। नरक लोक पृथ्वी के भीतर है। इसमें जन्म लेने वाले जीव का शरीर मोम की तरह होता है। नारकीय और देवगति वाले जीव वैक्रिय शरीरधारी होते हैं। नारकीय जीवों को आयुष्यकाल लम्बा होता है।

तिर्यंच गति में पशु–पक्षी, पेड़–पौधे या प्राकृतिक जीव होते हैं। झूठा मापतोल करना, कपट धोखाधड़ी करने वाले, माया–मृषा करने वाले तिर्यंच गति में पैदा होते हैं। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव तिर्यंच गति वाले होते हैं। तिर्यंच का आयुष्य काल अधिक लम्बा नहीं होता। इन जीवों को सर्दी, गर्मी सहन करनी पड़ती है। मनुष्य गति सबसे अच्छी गति है। बहुत पुण्य कर्मों के परिणामस्वरूप जीव मनुष्य योनि में जन्म लेता है। मनुष्य गति के अन्दर के जीव पांचइन्द्रियों वाले होते हैं। मानव के पास बुद्धि और विवेक होता है। बुद्धि और विवेक के द्वारा उसे सत्कर्म करना चाहिए। सत्कर्म, धर्म, ध्यान, जप, तप आदि के द्वारा मानव योनि प्राप्त होती है। मानव शरीर धर्म करने का साधन है। धर्म के अतिरिक्त सभी कर्म आत्मा के लिए बंधन होते हैं। जो जीव शरीर और आत्मा को पृथक् समझता है वही ज्ञानी होता है। भगवान् महावीर ने तटस्थ भाव से आत्मा और शरीर को देखा। वे केवल ज्ञानी थे। सरागसंयम, संयमासंयम, बालतपःकर्म, अकामनिर्जरा देवायुष्य कार्मण शरीर प्रायोग्य बंध बताया गया है। कर्मबंधन का मूल कारण इच्छाएं या कामनाएं है। इच्छा ही मानव के सुख का प्रमुख स्रोत है।

मनुष्य चारों गतियों में जा सकता है। पेड़–पौधे और तिर्यंच गति के जीव उसी गति में जन्म लेते हैं जहा वे उत्पन्न हुए हैं। मानव यदि अच्छा कर्म करता है तो देवलोक में जा सकता है। यदि वह बुरा कर्म करता है तो नरक योनि में जाता है। धर्मध्यान करना सबके प्रति प्रमोद भावना रखना अपने समान अन्य जीवों को समझने वाला, सदाचार करने वाला मानव योनि में जन्म लेता है। कर्मशास्त्र का यह सिद्धांत है कि जैसी करनी वैसी भरनी अर्थात् मनुष्य जैसा करता है वैसा ही उसके साथ होता है।